Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2024 SHISRRJ | Volume 7 | Issue 6
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

भारत की सॉफ्ट डिप्लोमेसी द्वारा ड्रैगन का संतुलनः भारत–म्यांमार रणनीतिक संबंधों की दिशा और संभावनाएँ

रश्मि बाजपेयी

शोध छात्रा, श्यामा प्रसाद मुखर्जी डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय प्रयागराज, उत्तर प्रदेश।

भूमिका– भारत और म्यांमार के बीच संबंध केवल भू–राजनीतिक समीकरणों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि इनका आधार गहरी सांस्कृतिक, धार्मिक और ऐतिहासिक साझेदारी पर टिका है। प्राचीन काल से ही भारत और म्यांमार के बीच व्यापार, बौद्ध धर्म, और सांस्कृतिक आदान–प्रदान की एक समृद्ध परंपरा रही है। आधुनिक समय में, जब वैश्विक राजनीति बहुध्रुवीय हो रही है और चीन आख्यात रणनीतिक आक्रामकता प्रदर्शित कर रहा है, भारत के लिए म्यांमार के साथ मजबूत, संतुलित और बहुआयामी संबंधों का निर्माण और संरक्षण अत्यंत आवश्यक हो गया है। भारत अपनी सॉफ्ट डिप्लोमेसी रणनीति के माध्यम से म्यांमार में दीर्घकालिक रणनीतिक प्रभाव स्थापित करने का प्रयास कर रहा है। यह प्रयास केवल चीन के प्रभाव का संतुलन नहीं, बल्कि क्षेत्रीय स्थिरता, विकास और संपर्क को भी सुनिश्चित करने की दिशा में अग्रसर है।

इस शोध लेख का उद्देश्य भारत की सॉफ्ट डिप्लोमेसी के विविध पहलुओं का विश्लेषण करना, म्यांमार में चीन के हस्तक्षेप के प्रभाव का विश्लेषण करना, तथा भारत–म्यांमार द्विपक्षीय संबंधों के भविष्य की संभावनाओं और चुनौतियों का समालोचनात्मक परीक्षण करना है। शोध इस प्रश्न का उत्तर खोजने का प्रयास करेगा कि भारत की सॉफ्ट डिप्लोमेसी किस सीमा तक चीन के प्रभाव को संतुलित कर सकती है और किस प्रकार म्यांमार के भीतर भारत की स्थिति को सुदृढ़ बना सकती है।

मुख्य शब्दः म्यांमार, ड्रैगन, सॉफ्ट डिप्लोमेसी, भारत।

भारत–म्यांमार संबंधों का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य– भारत और म्यांमार के बीच ऐतिहासिक संबंधों की जड़ें प्राचीन काल से जुड़ी हुई हैं। दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक, धार्मिक और व्यापारिक आदान–प्रदान ने एक मजबूत नींव तैयार की। बौद्ध धर्म का प्रसार भारत से म्यांमार तक हुआ, जिससे दोनों समाजों के बीच गहरे आध्यात्मिक और सांस्कृतिक संबंध बने। प्राचीन समय में मौर्य सम्राट अशोक के बौद्ध मिशनों से लेकर चोल वंश के व्यापारिक अभियानों तक, भारत और म्यांमार के बीच लगातार संवाद और संपर्क बना रहा। समुद्री व्यापार मार्गों के माध्यम से भारतीय वस्त्र, मसाले और औषधियाँ म्यांमार पहुँचती थीं, वहीं वहाँ के बहुमूल्य रत्न और लकड़ी भारत आते थे।

मध्यकाल में भी यह संबंध कमजोर नहीं पड़े। म्यांमार के वास्तुशिल्प शैली, विशेषकर पगोडा स्थापत्य कला पर भारतीय प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है। बगान के ऐतिहासिक मंदिर समूह में भारतीय वास्तुकला और बौद्ध विचारधारा की गहरी छाप परिलक्षित होती है। व्यापार मार्गों के माध्यम से न केवल वस्तुएँ बल्कि ज्ञान, साहित्य और धार्मिक विचारधाराएँ भी प्रसारित हुईं। इस प्रकार एक जीवंत सांस्कृतिक संपर्क का विकास हुआ, जिसने दोनों समाजों को एक–दूसरे के निकट बनाए रखा।

Copyright © 2024 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)**

औपनिवेशिक युग में, जब दोनों देश ब्रिटिश शासन के अधीन आए, तो उनकी राजनीतिक और प्रशासनिक व्यवस्थाओं में कई समानताएँ आईं। भारतीय मजदूरों और कर्मचारियों का म्यांमार में बसना, और भारतीय उद्यमियों का म्यांमार के आर्थिक परिदृश्य में योगदान, दोनों देशों के बीच एक महत्वपूर्ण सामाजिक–आर्थिक सेतु बन गया। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान भारत और म्यांमार रणनीतिक दृष्टि से जुड़े रहे, विशेषकर जापानी आक्रमण के विरुद्ध सहयोग में। इंफाल युद्ध और बर्मा अभियान जैसे संघर्षों में भारतीय और ब्रिटिश सेनाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद (भारत 1947 और म्यांमार 1948), दोनों देशों ने औपचारिक रूप से अपने द्विपक्षीय संबंधों को स्थापित किया। शुरुआती दशकों में दोनों देशों ने गुटनिरपेक्ष आंदोलन के तहत वैश्विक राजनीति में स्वतंत्र दृष्टिकोण अपनाते हुए सहयोग किया। हालाँकि, म्यांमार के आंतरिक राजनीतिक परिवर्तनों, विशेषकर 1962 के सैन्य तख्तापलट और बाद के सैन्य शासन ने उसके अंतरराष्ट्रीय संबंधों को सीमित कर दिया, जिससे भारत–म्यांमार संवाद भी प्रभावित हुआ। भारत की अपनी आंतरिक प्राथमिकताएँ और बाह्य रणनीतियाँ भी इस संबंध को स्थिर बनाए रखने में बाधा बनीं।

शीत युद्ध के बाद, भारत ने अपनी लुक ईस्ट नीति (1992) के तहत दक्षिण–पूर्व एशिया के देशों, विशेषकर म्यांमार के साथ अपने संबंधों को पुनर्जीवित करना प्रारंभ किया। इस नीति के तहत भारत ने म्यांमार को पूर्वोत्तर भारत के विकास और संपर्क रणनीति में एक प्रमुख कड़ी के रूप में देखा। भारत–म्यांमार व्यापार, निवेश और संपर्क परियोजनाओं में उल्लेखनीय वृद्धि हुई, जिसमें विशेष रूप से इंफाल–मोरी–तामू सड़क परियोजना और कलादान मल्टीमोडल ट्रांजिट ट्रांसपोर्ट प्रोजेक्ट जैसे प्रयास शामिल हैं।

वर्ष 2014 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में एक्ट ईस्ट नीति की शुरुआत ने इस प्रयास को नई गति प्रदान की। अब भारत केवल सांस्कृतिक और आर्थिक आदान–प्रदान तक सीमित नहीं रहा, बल्कि रणनीतिक, रक्षा और सुरक्षा सहयोग के क्षेत्रों में भी सक्रिय रूप से म्यांमार के साथ भागीदारी कर रहा है। इस प्रकार, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य से स्पष्ट होता है कि भारत और म्यांमार के संबंधों ने समय के साथ कई उतार–चढ़ाव देखे हैं, किंतु उनके मूल में स्थायित्व, अनुकूलनशीलता और सहयोग की भावना सदैव विद्यमान रही है, जो वर्तमान रणनीतिक चुनौतियों और अवसरों को समझने में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

भारत की सॉफ्ट डिप्लोमेसी रणनीति– भारत ने म्यांमार के साथ अपने संबंधों को मजबूती देने के लिए सॉफ्ट डिप्लोमेसी को एक प्रमुख साधन के रूप में अपनाया है। यह रणनीति आर्थिक सहायता, विकास परियोजनाओं, शैक्षणिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से विश्वास निर्माण और जनसंपर्क को सशक्त बनाने पर आधारित है। म्यांमार के लिए भारत की सॉफ्ट डिप्लोमेसी न केवल पारंपरिक मैत्री का विस्तार है, बल्कि चीन के बढ़ते प्रभाव को संतुलित करने की रणनीतिक आवश्यकता भी है।

सांस्कृतिक कूटनीति– भारत और म्यांमार के बीच सांस्कृतिक कूटनीति की नींव बौद्ध धर्म पर आधारित है। भारत ने बौद्ध सर्किट परियोजनाओं के माध्यम से तीर्थाटन को बढ़ावा दिया है, जिसमें बोधगया, सारनाथ और कुशीनगर जैसे महत्वपूर्ण स्थलों को म्यांमार के बौद्ध तीर्थयात्रियों के लिए आकर्षक बनाया गया है। इसके अतिरिक्त, रामायण सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रम के तहत भारत और म्यांमार के कलाकारों और विद्वानों के बीच नियमित आदान–प्रदान को बढ़ावा दिया गया है, जिससे सांस्कृतिक एकता और आपसी समझ को बल मिला है। भारतीय सांस्कृतिक केंद्र यांगून में भारतीय शास्त्रीय नृत्य, संगीत और हिंदी भाषा शिक्षण के माध्यम से भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

शैक्षणिक एवं विकासात्मक सहयोग– भारत ने ITEC (Indian Technical and Economic Cooperation) और ICCR (Indian Council for Cultural Relations) जैसी योजनाओं के माध्यम से म्यांमार के छात्रों और पेशेवरों को प्रशिक्षण और छात्रवृत्तियाँ प्रदान की हैं। इसके अंतर्गत सूचना प्रौद्योगिकी, अंग्रेजी भाषा, विधि, और प्रशासन जैसे क्षेत्रों में विशेष प्रशिक्षण दिया जाता है। भारतीय आईटी केंद्रों की स्थापना ने म्यांमार में डिजिटल साक्षरता और तकनीकी दक्षता को बढ़ाया है, जो दीर्घकालिक विकास और भारत के प्रति सद्भावना को सुदृढ़ करता है।

जनसंपर्क पहल– सीमा व्यापार मेले, थिंक टैंक संवाद और नागरिक समाज की सहभागिता भारत की जनसंपर्क कूटनीति का हिस्सा हैं। भारत–म्यांमार सीमा पर आयोजित व्यापार मेलों ने सीमावर्ती समुदायों के बीच आर्थिक सहभागिता और सांस्कृतिक आदान–प्रदान को बढ़ाया है। इसके अतिरिक्त, दोनों देशों के थिंक टैंक और शैक्षणिक संस्थानों के बीच संवाद से रणनीतिक समझ और नीति निर्माण में सहयोग को प्रोत्साहन मिला है।

विकासात्मक परियोजनाएँ– भारत ने म्यांमार में कई महत्वपूर्ण विकास परियोजनाएँ प्रारंभ की हैं। कलादान मल्टीमोडल ट्रांजिट ट्रांसपोर्ट प्रोजेक्ट म्यांमार के सितवे बंदरगाह को भारत के पूर्वोत्तर राज्यों से जोड़ने के लिए एक महत्वपूर्ण पहल है। इसके अतिरिक्त, भारत द्वारा म्यांमार में सड़क, पुल, और बिजली वितरण जैसे बुनियादी ढांचे के क्षेत्रों में भी सहायता प्रदान की गई है। भारत–म्यांमार मैत्री पुल परियोजना जैसे प्रयास दोनों देशों के बीच भौतिक संपर्क को बढ़ाने में सहायक रहे हैं।

प्रमुख भारत–म्यांमार परियोजनाओं की प्रगति

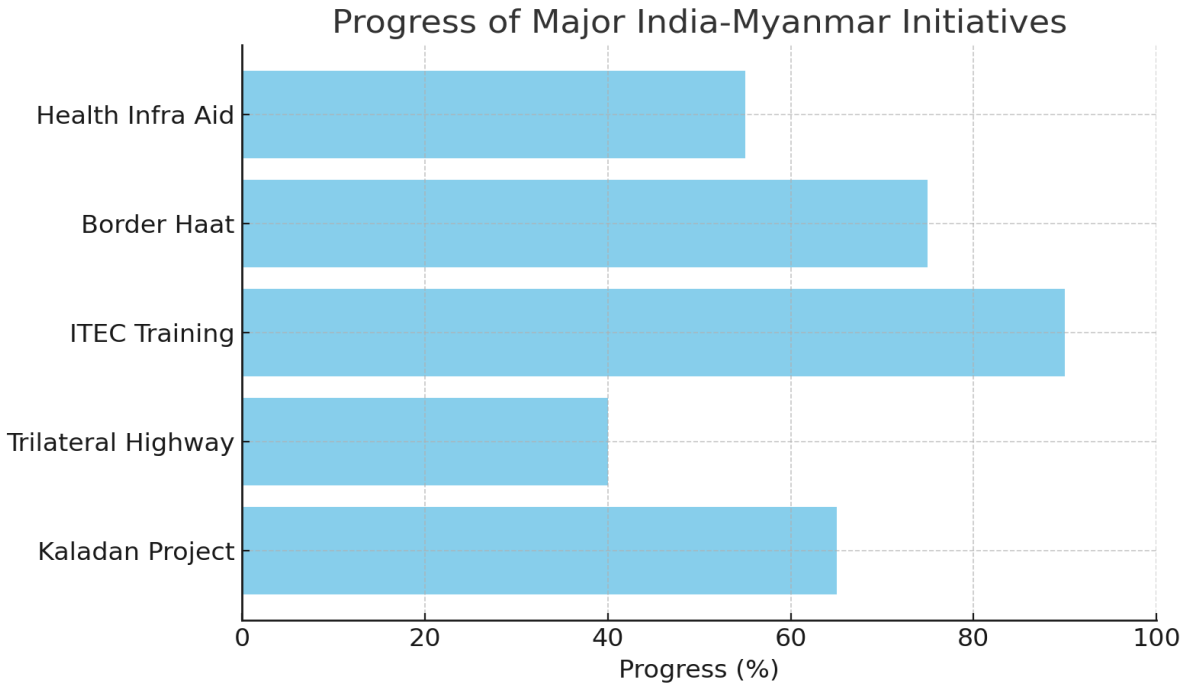

भारत की सॉफ्ट डिप्लोमेसी रणनीति म्यांमार में केवल गुडविल निर्माण का माध्यम नहीं है, बल्कि यह भारत के व्यापक रणनीतिक हितों, विशेषकर पूर्वोत्तर भारत की सुरक्षा और आसियान के साथ गहरे जुड़ाव के लक्ष्य को भी साधने का एक प्रभावी उपकरण है।

वर्षवार भारतीय सहायता (2016–2022)

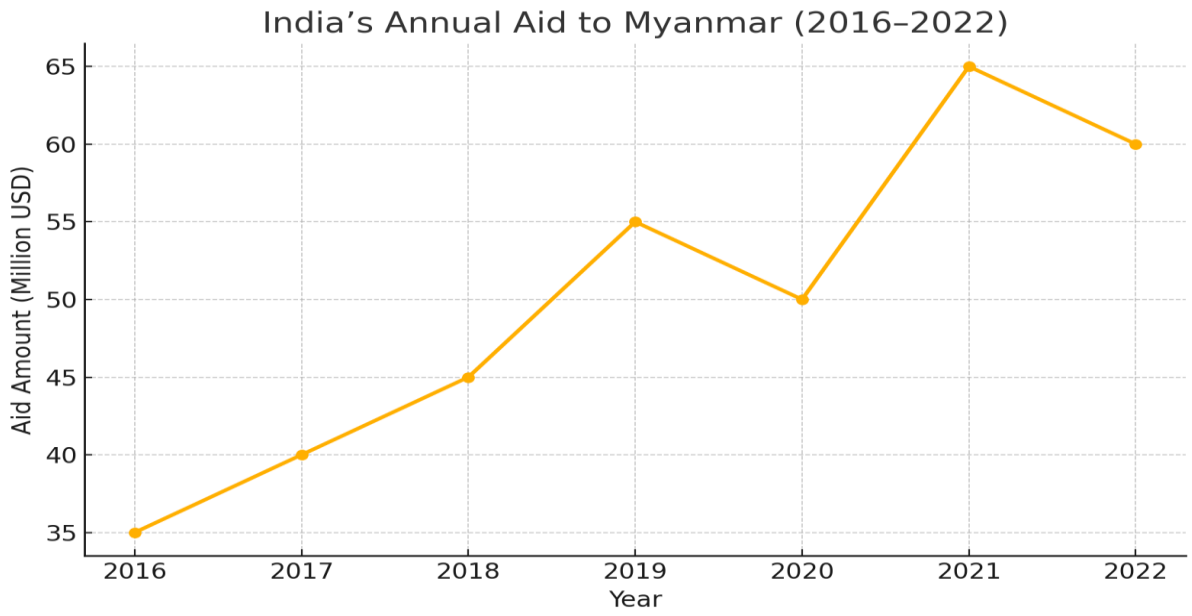

म्यांमार में चीन का हस्तक्षेप– चीन ने म्यांमार में अपनी उपस्थिति को आर्थिक, सामरिक और कूटनीतिक स्तरों पर निरंतर विस्तार दिया है। यह हस्तक्षेप केवल व्यापार और निवेश तक सीमित नहीं है, बल्कि रणनीतिक और सुरक्षा आयामों में भी गहराई से व्याप्त है। चीन–म्यांमार आर्थिक गलियारा इसका प्रमुख उदाहरण है, जो म्यांमार के यांगून से क्याउकफ्यू बंदरगाह तक सीधा संपर्क स्थापित करता है। इस गलियारे के माध्यम से चीन को हिंद महासागर तक सीधी पहुँच मिलती है, जो मलक्का जलडमरूमध्य पर उसकी निर्भरता को कम करता है।

आर्थिक प्रभाव– चीन ने म्यांमार में बड़े पैमाने पर निवेश किया है, विशेषतः ऊर्जा, बुनियादी ढांचा और निर्माण क्षेत्रों में। क्याउकफ्यू विशेष आर्थिक क्षेत्र, तेल और गैस पाइपलाइनों की स्थापना, और बड़े बांध परियोजनाएँ (जैसे मित्सोन बांध) चीन के आर्थिक प्रभुत्व के उदाहरण हैं। हालाँकि, इन परियोजनाओं को स्थानीय विरोध और पारदर्शिता की कमी के कारण कई बार आलोचना का सामना करना पड़ा है। फिर भी, चीन ने आर्थिक सहायता और निवेश के माध्यम से म्यांमार के सैन्य नेतृत्व के साथ मजबूत संबंध बनाए हैं।

रणनीतिक और सैन्य प्रभाव– रणनीतिक दृष्टि से, चीन म्यांमार के उत्तरी क्षेत्रों में जातीय सशस्त्र गुटों के साथ परोक्ष संपर्क बनाए रखता है। यह न केवल चीन को म्यांमार के आंतरिक राजनीतिक घटनाक्रमों में प्रभाव बनाए रखने का साधन देता है, बल्कि संकट की स्थिति में उसे एक कूटनीतिक दबाव उपकरण भी प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त, चीन म्यांमार की सेना (ज्जउंकूं) को सैन्य उपकरण, प्रशिक्षण और तकनीकी सहायता प्रदान करता है, जिससे उसका म्यांमार के सुरक्षा ढांचे पर प्रभाव बढ़ता है।

कूटनीतिक समर्थन– 2021 के सैन्य तख्तापलट के बाद, जब अंतरराष्ट्रीय समुदाय ने म्यांमार की सेना की आलोचना की और प्रतिबंध लगाए, चीन ने सैन्य जुंटा के साथ अपने संबंधों को बनाए रखा। उसने आंतरिक मामलों में ष्गैर–हस्तक्षेपष् की नीति का हवाला देते हुए म्यांमार के सैन्य नेतृत्व को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अप्रत्यक्ष समर्थन प्रदान किया। यह चीन की दीर्घकालिक रणनीति का हिस्सा है, जिसके तहत वह म्यांमार में स्थिरता और अपने रणनीतिक हितों की रक्षा सुनिश्चित करना चाहता है।

भारत के लिए रणनीतिक चुनौतियाँ– चीन की यह गहन उपस्थिति भारत के लिए कई रणनीतिक चुनौतियाँ उत्पन्न करती है। पूर्वोत्तर भारत की सुरक्षा, हिंद महासागर क्षेत्र में चीन की पहुँच, और भारत–म्यांमार संपर्क परियोजनाओं में प्रतिस्पर्धा जैसी समस्याएँ उभरती हैं। साथ ही, चीन द्वारा म्यांमार के सीमावर्ती क्षेत्रों में प्रभाव बढ़ाने से भारत के पूर्वोत्तर राज्यों में विद्रोही गतिविधियों के पुनरुत्थान का भी खतरा बना रहता है।

इस प्रकार, म्यांमार में चीन का हस्तक्षेप बहुआयामी है और भारत की सॉफ्ट डिप्लोमेसी तथा रणनीतिक पहलियों के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती प्रस्तुत करता है। इस चुनौती का प्रभावी सामना करने के लिए भारत को संतुलित, दूरदर्शी और सक्रिय कूटनीति की आवश्यकता है।

भारत–म्यांमार रणनीतिक संबंधों पर सॉफ्ट डिप्लोमेसी का प्रभाव– भारत की सॉफ्ट डिप्लोमेसी रणनीति ने म्यांमार के साथ द्विपक्षीय संबंधों के विभिन्न आयामों पर सकारात्मक प्रभाव डाला है। यह प्रभाव केवल सतही नहीं रहा, बल्कि आपसी विश्वास, रक्षा सहयोग, और पूर्वोत्तर भारत की रणनीतिक सुरक्षा को मजबूती देने तक विस्तृत रहा है।

आपसी विश्वास निर्माण– भारत द्वारा शिक्षा, स्वास्थ्य, सूचना प्रौद्योगिकी और बुनियादी ढाँचे के क्षेत्रों में दी गई सहायता ने म्यांमार के नागरिक समाज और सरकार के बीच भारत के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण को जन्म दिया है। भारतीय छात्रवृत्तियाँ, विकास परियोजनाएँ और सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रम म्यांमार में भारत की एक विश्वसनीय और परोपकारी छवि प्रस्तुत करते हैं। इससे पारंपरिक राजनीतिक–सैन्य संपर्कों से परे एक गहरी सामाजिक स्वीकृति का निर्माण हुआ है, जो दीर्घकालिक रणनीतिक साझेदारी के लिए आधार प्रदान करता है।

रक्षा सहयोग– सॉफ्ट डिप्लोमेसी के परिप्रेक्ष्य में विकसित विश्वास ने रक्षा क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण परिणाम दिए हैं। भारत ने म्यांमार की सेना को विद्रोह रोधी अभियानों के लिए प्रशिक्षण, सैन्य हार्डवेयर और तकनीकी सहायता प्रदान की है। इसके अतिरिक्त, भारत–म्यांमार संयुक्त सैन्य अभ्यास और खुफिया जानकारी साझा करने की पहल ने दोनों देशों के रक्षा सहयोग को नई ऊँचाइयाँ दी हैं। इस सहयोग ने भारत को पूर्वोत्तर भारत में माओवादी और उग्रवादी गतिविधियों को नियंत्रित करने में मदद की है, जो म्यांमार की सीमा से प्रभावित होती थीं।

पूर्वोत्तर भारत के लिए रणनीतिक महत्त्व– म्यांमार भारत के एक्ट ईस्ट नीति का पूर्वी द्वार है। कलादान मल्टीमोडल परियोजना और भारत–म्यांमार–थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग जैसी पहल पूर्वोत्तर भारत को दक्षिण–पूर्व एशिया से जोड़ने में सहायक हैं। सॉफ्ट डिप्लोमेसी के माध्यम से भारत ने म्यांमार को एक रणनीतिक सहयोगी के रूप में प्रस्तुत किया है, जो पूर्वोत्तर क्षेत्र में आर्थिक विकास, संपर्क विस्तार और सुरक्षा के लिए अत्यंत आवश्यक है। इसके माध्यम से भारत न केवल क्षेत्रीय असंतोष को शांत कर सकता है, बल्कि चीन के स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स जैसी रणनीतिक परियोजनाओं का प्रभावी संतुलन भी कर सकता है।

चुनौतियाँ और संभावनाएँ– भारत और म्यांमार के बीच संबंधों को गहन बनाने में भारत की सॉफ्ट डिप्लोमेसी की भूमिका तो महत्वपूर्ण रही है, लेकिन यह प्रयास कई चुनौतियों और संभावनाओं से घिरा हुआ है। इन चुनौतियों का प्रभावी प्रबंधन और संभावनाओं का कुशलतापूर्वक उपयोग भारत–म्यांमार रणनीतिक साझेदारी के भविष्य को निर्धारित करेगा।

चुनौतियाँ

म्यांमार की आंतरिक राजनीतिक अस्थिरता– म्यांमार में फरवरी 2021 के सैन्य तख्तापलट के बाद उत्पन्न अस्थिरता ने भारत की कूटनीतिक रणनीति को जटिल बना दिया है। सैन्य शासन के विरुद्ध घरेलू विरोध और

अंतरराष्ट्रीय दबाव के कारण भारत को संतुलन बनाना पड़ रहा है ताकि वह लोकतांत्रिक मूल्यों और रणनीतिक आवश्यकताओं के बीच सामंजस्य स्थापित कर सके।

चीन की आक्रामक आर्थिक एवं सामरिक रणनीति– चीन ने म्यांमार में विशाल निवेश और रणनीतिक परियोजनाओं के माध्यम से अपना प्रभाव स्थापित कर लिया है। भारत को प्रतिस्पर्धा में बने रहने के लिए अपनी परियोजनाओं के शीघ्र कार्यान्वयन और आर्थिक प्रस्तावों की आकर्षकता बढ़ाने की आवश्यकता है।

सीमावर्ती असुरक्षा– भारत–म्यांमार सीमा पर उग्रवादी गतिविधियों और अवैध व्यापार की समस्याएँ लगातार चुनौती पेश कर रही हैं। सीमा प्रबंधन और सुरक्षा सहयोग को और मजबूत करने की आवश्यकता है ताकि पूर्वोत्तर भारत में स्थिरता बनी रह सके।

परियोजनाओं का धीमा कार्यान्वयन– भारत द्वारा प्रायोजित परियोजनाओं, जैसे कलादान मल्टीमोडल परियोजना और त्रिपक्षीय राजमार्ग, के कार्यान्वयन में देरी भारत की विश्वसनीयता को प्रभावित करती है और चीन को रणनीतिक बढ़त देती है।

संभावनाएँ

1. **लोकतांत्रिक ताकतों के साथ दीर्घकालिक जुड़ाव**
   भारत म्यांमार के लोकतांत्रिक संस्थानों और नागरिक समाज के साथ जुड़कर अपने सॉफ्ट पॉवर को मजबूत कर सकता है। इससे दीर्घकालीन सहयोग का आधार बनेगा।
2. **आर्थिक और विकासात्मक पहल का विस्तार**
   विकास परियोजनाओं, शिक्षा, स्वास्थ्य और डिजिटल कनेक्टिविटी के क्षेत्रों में भारत की सक्रियता से म्यांमार में भारत के प्रति विश्वास और समर्थन को और गहरा किया जा सकता है।
3. **आसियान और बिम्सटेक मंचों के माध्यम से बहुपक्षीय सहयोग**
   भारत म्यांमार को क्षेत्रीय बहुपक्षीय मंचों के माध्यम से सक्रिय रूप से जोड़ सकता है, जिससे उसे वैश्विक समर्थन और आर्थिक अवसर प्रदान किए जा सकते हैं।
4. **सामरिक संपर्क का सुदृढ़ीकरण**
   पूर्वोत्तर भारत और म्यांमार के बीच भौतिक संपर्क को सुदृढ़ करने से न केवल व्यापार और निवेश को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि सुरक्षा सहयोग भी और अधिक प्रभावी हो सकेगा।
   इस प्रकार, भारत के सामने मौजूद चुनौतियाँ जटिल अवश्य हैं, परंतु सक्रिय, दूरदर्शी और समावेशी कूटनीति के माध्यम से इनसे निपटकर भारत–म्यांमार संबंधों को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया जा सकता है।

नीतिगत सुझाव– भारत को म्यांमार के साथ अपने रणनीतिक संबंधों को और अधिक मजबूत करने के लिए बहुआयामी और सक्रिय नीति अपनानी होगी। निम्नलिखित नीति सुझाव इस दिशा में उपयोगी हो सकते हैं:

1. **परियोजनाओं का शीघ्र कार्यान्वयन**
   भारत द्वारा आरंभ की गई प्रमुख संपर्क और विकास परियोजनाओं जैसे कि कलादान मल्टीमोडल ट्रांजिट प्रोजेक्ट और भारत–म्यांमार–थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग का समयबद्ध और प्रभावी कार्यान्वयन अत्यंत आवश्यक है। इससे न केवल भारत की विश्वसनीयता बढ़ेगी, बल्कि चीन के आर्थिक प्रभाव का प्रभावी संतुलन भी स्थापित किया जा सकेगा।
2. **बहुपक्षीय मंचों पर सक्रिय सहयोग**

भारत को आसियान, बिम्सटेक और अन्य क्षेत्रीय मंचों पर म्यांमार के साथ साझेदारी को और अधिक सक्रिय रूप से बढ़ावा देना चाहिए। इससे म्यांमार को क्षेत्रीय समावेशन का लाभ मिलेगा और भारत की क्षेत्रीय नेतृत्व की भूमिका मजबूत होगी।

3. **लोकतंत्र और नागरिक समाज का समर्थन**
   भारत को म्यांमार के लोकतांत्रिक संस्थानों, नागरिक समाज और युवा नेतृत्व के साथ दीर्घकालिक संवाद और समर्थन बनाए रखना चाहिए। इससे लोकतंत्र के प्रति भारत की प्रतिबद्धता सुदृढ़ होगी और जनसंपर्क के स्तर पर गहरी समझ बनेगी।
4. **सांस्कृतिक और शैक्षणिक सहयोग का विस्तार**
   भारतीय सांस्कृतिक केंद्रों, छात्रवृत्तियों, शिक्षा और कौशल विकास कार्यक्रमों को म्यांमार में और अधिक सक्रिय बनाना चाहिए। इससे दोनों देशों के लोगों के बीच विश्वास और संबंधों की स्थायित्वता में वृद्धि होगी।
5. **रक्षा और सुरक्षा सहयोग को गहन बनाना**
   भारत को म्यांमार के साथ सीमा प्रबंधन, आतंकवाद–रोधी अभियानों और विद्रोह–निरोधक उपायों में सहयोग को और गहरा करना चाहिए। संयुक्त सैन्य अभ्यासों, खुफिया साझेदारी और रक्षा उपकरणों के क्षेत्र में सहयोग को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।
6. **स्थानीय समुदायों के साथ जुड़ाव**
   सॉफ्ट डिप्लोमेसी को सफल बनाने के लिए भारत को म्यांमार के सीमावर्ती और आंतरिक समुदायों के साथ सीधे जुड़ाव की पहल करनी चाहिए। स्वास्थ्य, शिक्षा, पेयजल और ऊर्जा जैसी बुनियादी सुविधाओं में निवेश से भारत की जमीनी पकड़ मजबूत होगी।

निष्कर्ष– भारत और म्यांमार के बीच संबंध केवल कूटनीतिक या आर्थिक नहीं, बल्कि गहरे ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और रणनीतिक आधार पर टिके हुए हैं। भारत की सॉफ्ट डिप्लोमेसी ने म्यांमार में भारत की छवि को एक विश्वसनीय, सहायक और मित्रवत साझेदार के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

बदलते भू–राजनीतिक परिदृश्य, विशेषतः म्यांमार में चीन के बढ़ते हस्तक्षेप, ने भारत के लिए अवसरों और चुनौतियों का एक जटिल ताना–बाना प्रस्तुत किया है। भारत ने जहाँ सॉफ्ट डिप्लोमेसी के माध्यम से आपसी विश्वास और सांस्कृतिक निकटता को बढ़ावा दिया है, वहीं उसे अपनी रणनीतिक पहलियों को और अधिक सक्रिय, दूरदर्शी और गतिशील बनाने की आवश्यकता है।

भारत की सॉफ्ट डिप्लोमेसी रणनीति को तभी पूर्ण सफलता मिल सकती है जब उसे मजबूत आर्थिक, रक्षा, और बहुपक्षीय कूटनीतिक पहलों के साथ संतुलित किया जाए। स्थानीय समुदायों से सीधे जुड़ाव, लोकतंत्र के समर्थन, तथा बहुपक्षीय मंचों पर म्यांमार को मजबूती से साथ जोड़ने की दिशा में प्रयास अत्यंत आवश्यक हैं।

अंततः, भारत को म्यांमार में दीर्घकालिक रणनीतिक उपस्थिति बनाए रखने के लिए अपनी सॉफ्ट डिप्लोमेसी के साथ–साथ कठोर रणनीतिक साधनों का भी संयमित और विवेकपूर्ण उपयोग करना होगा। तभी भारत दक्षिण–पूर्व एशिया में अपने भू–राजनीतिक हितों की प्रभावी रक्षा कर सकेगा और चीन के प्रभाव को संतुलित करते हुए एक स्थिर एवं समावेशी क्षेत्रीय व्यवस्था को सुदृढ़ बना सकेगा।

सन्दर्भ सूची

1. मिनिस्ट्री ऑफ एक्सटर्नल अफेयर्स, गवर्नमेंट ऑफ इंडिया, ऐक्ट ईस्ट पॉलिसी, www-mea-gov-in/act-east-policy-htm
2. पांडा, जगन्नाथ, इंडिया–म्यांमार रिलेशन्सः कॉन्फ्रंटिंग द चाइनीज़ चौलेंज, जर्नल ऑफ एशियन सेक्योरिटी एंड इंटरनेशनल अफेयर्स, 2016
3. हाके, युर्गेन, म्यांमार फॉरेन पॉलिसी अंडर द एन.एल.डी.: द नीड फॉर अ बैलेंस्ड अप्रोच, आई.एस.ई.ए.एस. पब्लिशिंग, 2018
4. मिश्रा, राहुल, इंडियाज़ सॉफ्ट पावर डिप्लोमेसी इन साउथईस्ट एशिया, ओ.आर.एफ. ऑकेजनल पेपर नं. 184, 2019
5. इरावड्डी, चाइना–म्यांमार रिलेशन्स डीपन डेस्पाइट चैलेंजेज़, www.irrawaddy.com
6. भौमिक, सुभीर, इन्सरजेंसीज़ इन इंडियाज़ नॉर्थईस्टः कॉन्फ्लिक्ट, को–ऑप्शन एंड चेंज, ईस्ट–वेस्ट सेंटर वाशिंगटन, 2007
7. थांत म्यिंट–यू, द रिवर ऑफ लॉस्ट फुटस्टेप्सः अ पर्सनल हिस्ट्री ऑफ बर्मा, फरार, स्ट्रॉस एंड गिरौक्स, 2006
8. मोहन, सी. राजा, मोदीज़ ऐक्ट ईस्ट पॉलिसीः फाइंडिंग अपॉर्च्यूनिटीज़ अमिड चैलेंजेज़, कार्नेगी इंडिया, 2017
9. सिंह, स्वरन, चाइना–म्यांमार रिलेशन्सः मल्टीडाइमेंशनल पार्टनरशिप अंडर रीबैलेंसिंग एशिया, पेंटागन प्रेस, 2020
10. एग्रेटो, रेनॉड और लैरी जगेन, सोल्जर्स एंड डिप्लोमेसी इन बर्माः अंडरस्टैंडिंग द फॉरेन रिलेशन्स ऑफ द बर्मीज़ प्रेटोरियन स्टेट, एन.यू.एस. प्रेस, 2013